(क्षितिज)
कक्षा - X
विषय - हिन्दी

पाठ - 8
# बालगोबिन भगत

प्र-1 उ॰ बालगोबिन भगत बेटा-पतोहू से युक्त परिवार, खेतीबारी और साफ-सुथरा मकान रखने वाले गृहस्थ थे, फिर भी उनका आचरण साधुओं जैसा था। वह सदैव खरी-खरी बातें कहते थे। वे झूठ नहीं बोलते थे। वे किसी भी वस्तु को बिना पूछे प्रयोग नहीं करते थे। वे खामखाह किसी से झगड़ा नहीं करते थे। वे अत्यंत साधारण वेशभूषा में रहते थे। वे अपनी उपज को कबीरपंथी मठ पर चढ़ावा के रूप में दे देते थे। वहाँ से जो कुछ प्रसाद रूप में मिलता था उसी में परिवार का निर्वाह करते थे।

प्र-2 (उ॰) भगत की पुत्रवधू उन्हें इसलिए अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि भगत के इकलौते पुत्र और उसके पति की मृत्यु के बाद भगत अकेले रह गए थे। स्वयं भगत वृद्धावस्था में थे और उसे इस बात की अधिक चिंता खाए जा रही थी कि उसके जाने के बाद बुढ़ापे में कौन उसके ससुर के लिए भोजन बनाएगा। बीमार पड़े तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा।

प्र-3 (उ॰) पुत्र के निधन पर भगत को ऐसा लगा जैसे घर में उत्सव का माहौल छा गया है। उन्होंने अपने बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफेद कपड़े से ढँककर उसे फूलों और तुलसीदल से सजाया। सिरहाने एक चिराग जलाकर उसके सामने ज़मीन पर ही आसन जमाए प्रभु के गीत गाने लगे। रोती हुई बहू के पास जाकर उसे उत्सव मनाने के लिए कहा। उन्हें ऐसा लगा जैसे मृत्यु के उपरांत आत्मा रूपी विरहिणी अपने प्रेमी रूपी परमात्मा के पास चली गई, अतः इससे बढ़कर आनंद

की और कोई बात नहीं।

उत्तर-4 बालगोबिन भगत गृहस्थ ...
थे। वह मँझोले कद के ...
गोरे-चिट्टे आदमी थे ...
लंबी - दाढ़ी या जटाजूट ...
हमेशा सफेद बालों से जगमग ...
बहुत कम पहनते। कमर ...
और सिर पर कबीर पंथि...
जाड़े में कम्बल सिर्फ एक ...
ओढ़े रहते। मस्तक पर ...
चंदन, जो नाक के एक छो...
की तरह शुरू होता। गले ...
एक बेडौल माला बाँधे र...
उनका व्यक्तित्व मानक ...
और करतलों के मध्य ...
से समय प्रभु अर्पित मे...

नोट: उत्तर पाँच (5) प्रश्न-6 के बाद ...

प्र6 उत्तर बालगोबिन भगत प्रभु ...
गाया करते थे। उनके गान...
एक निश्चित गति होती थी ...
के सब श्रोताओं के मन ...
एक जादू ऐसा चलता कि ...
भगत के साथ सबके तन ...
औरतें उस गीत को गुनगु...
धान काटने वाले किसानों ...
निश्चित लय में चलने ल...
जादुई प्रभाव था। यह भ...
पर छा जाता था। यहाँ ...
और गर्मियों की उमस ...

न परिवार, खेतीबारी
गृहस्थ थे,
था। वह सदैव
ही बोलते थे।
नहीं करते थे।
कहते थे। वे
वे अपनी अनाज
में दे देते थे,
था उसी में

नहीं छोड़ना
और उसके
गए थे। स्त्रियाँ
इस बात की
के उसके जाने
के लिए भोजन
कुल्लू पानी भी

लगा जैसे
है। उन्होंने
ई पर लिटाकर
और तुलसीदल
जलाकर उसके
गीत गाने लगे।
सव मनाने के
त्यु के उपरांत
की परमात्मा
कर आनंद

भी और कोई बात नहीं।

उत्तर-5. बालगोबिन भगत गृहस्थ होते हुए भी खरे-खरे साधु थे। वह मँझोले कद के, आयु साठ से ऊपर की, गोरे-चिट्टे आदमी थे। बाल पक गए थे पर लंबी-दाढ़ी या जटाजूट नहीं रखते थे। पर चेहरा हमेशा पके बालों से जगमग किए रहता। कपड़े बहुत कम पहनते। कमर में एक लंगोटी मात्र और सिर पर कबीर पंथियों की सी कनफटी टोपी, जाड़े के वक्त सिर्फ एक काली कमली ऊपर से ओढ़े रहते। मस्तक पर हमेशा चमकता हुआ रामानंदी चंदन जो नाक के एक छोर से ही औरतों के टीके की तरह शुरू होता। गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला बाँधे रहते।

उनका व्यक्तित्व गायक भक्तों जैसा था। खँजड़ियों और करतालों के मध्य अपने प्रेमी मंडली के साथ हर समय प्रभु भक्ति में लीन रहते।

Note: उत्तर पाँच (5) प्रश्न-6 के बाद लिखा है ➔

प्र6 उत्तर बालगोबिन भगत प्रभु भक्ति के मस्ती भरे गीत गाया करते थे। उनके गानों में एक निश्चित ताल, एक निश्चित गति होती थी। उस ताल स्वर के चढ़ाव के साथ श्रोताओं के मन भी ऊपर उठने लगते थे। एक क्षण ऐसा आता कि खँजड़ी लिए बालगोबिन भगत के साथ सबके तन और मन नृत्यशील हो उठते। औरतें उस गीत को गुनगुनाने लगती थी। खेतों में काम करने वाले किसानों के हाथ और पाँव एक विशेष लय में चलने लगते थे। उनके संगीत में जादुई प्रभाव था। वह मनमोहक प्रभाव सारे वातावरण पर छा जाता था। यहाँ तक कि कड़ाके की सर्दी और गर्मियों की उमस भी उन्हें डिगा नहीं पाती थी

उत्तर-5. बालगोबिन भगत सिद्धांतवादी व्यक्ति थे। अपने जीवन में सिद्धांतों को निभाने के लिए कभी-कभी इतनी बारीकी तक चले जाते थे कि लोगों को आश्चर्य होने लगता था, जैसे कि कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते। एक सच्चे साधु के गुणों से भरपूर होने के बावजूद भी वह एक गृहस्थ थे। लेकिन उनकी सब चीज़ 'साहब' यानी ईश्वर की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार, अर्थात कबीरपंथी मठ में ले जाते और जो भेंट स्वरूप मिलता उसे प्रसाद समझकर घर लाते और इसी से अपना जीवन निर्वाह करते।

उत्तर-7. बालगोबिन भगत प्रचलित मान्यताओं को नहीं मानते थे। यह पाठ के निम्नलिखित मार्मिक प्रसंगों से ज्ञात होता है —

क) भगत ने अपने इकलौते पुत्र के निधन पर न शोक मनाया और न उसके क्रिया-कर्म को ज्यादा तूल दिया।

ख) उन्होंने पुत्र के शव को स्वयं मुखाग्नि न देकर अपनी पुत्रवधू से मुखाग्नि दिलवायी।

ग) उन्होंने विधवा विवाह के समर्थन में कदम उठाते हुए उसके भाई को कहा कि इसको साथ ले जाकर दुबारा विवाह करवा देना।

घ) वे साधुओं के संबल लेने और गृहस्थों के भिक्षा माँगने का विरोध करते हुए तीस कोस दूर गंगा स्नान करने जाते और उपवास रखते हुए यह यात्रा पूरी करते थे।

उत्तर-8. खेतों
खेतों
में कीच
पौधों
का
कि
पुकार
मेंढ़
होते
न ओ
के हो
गुनगु
हल
पर
सारे

उत्तर-9. बालगो
लिखित
क) बाल
टोपी
सर्वि
ख) वे
ईश्वर
के
ग) वे
कर
जो
घ) वे क
होने
गृहस्
बात